स्निग्धगम्भीरनिर्घोषमेकं स्यन्दनमास्थितौ ।

प्रावृषेण्यं पयोवाहं विद्युदैरावताविव ।।36।।

अन्वय स्निग्धगम्भीनिघोषं एकं स्यन्दनम् आस्थितौ तौ प्रावृषेण्यं पयोवाहं (आस्थितौ) विद्युदैरावतौ इव (जग्मतुः)।

अनुवाद वे दोनों मधुर और गम्भीर शब्द करने वाले एक रथ पर चढ़े हुए ऐसे चले जा रहे थे जैसे वर्षाकाल के बादल पर ऐरावत और उसकी पत्नी विद्युत (बिजली) (सवार) हों।

टिप्पणियां

स्निग्ध स्निग्धश्च गम्भीरश्च इति स्निग्धगम्भीरः स्निग्धगम्भीरो निर्घोषो यस्य सः (बहुव्रीहि), तम्। यह समस्त पद 'स्यन्दनं' और 'पयोवाहं' इन दो विशेष्य पदों की विशेषता बताने बताने वाला विशेषण पद है। वे जिनमें से मधुर और गम्भीर ध्वनि निकल रही है अर्थात् गम्भीर और मधुर ध्वनि करने वाले रथ और बादल। दोनों दिलीप तथा सुदक्षिणा के एक ही रथ पर आरोहण पर कालिदास जोर देकर उनकी कार्यसिद्धि तथा पति-पत्नी के बीच अत्यन्त सौमनस्य को सम्प्रेषित करना चाहते हैं।

प्रावृषेण्यम् प्रावृषि भवः प्रावृषेण्यः। वर्षा ऋतु का, वर्षा ऋतु में होने वाला; 'पयोवाह' का विशेषण है। प्रावृष एण्यः।

पयोवाहम् पयो वहति इति पयोवाहः, तम्। पयस् वह् अण्। बादल।

विद्युत बिजली। विद्युत को ऐरावत की पत्नी माना जाता है।

विशेष ऐरावत शब्द का प्रचलित अर्थ है-इन्द्र का सफेद हाथी। अतः 'ऐरावत' इन्द्र के सफेद हाथी का नाम है। परन्तु मल्लिनाथ के विचार में यहां 'ऐरावत' शब्द 'इन्द्र का हाथी' नहीं अपितु 'बादल' अर्थ का सूचक है। व्युत्पत्ति है - इरात्र आपः (जल), इरावान् अत्र समुद्र, तत्र भवः ऐरावत अत्र मेघ जो समुद्र में से उत्पन्न होता है। इस प्रकार मल्लिनाथ के मत से प्रस्तुत पद्य में 'ऐरावत' पद का अर्थ है- मेघ, बादल। पौराणिक परम्परा के अनुसार भी ऐरावत का जन्म समुद्र से हुआ है। समुद्रमन्थन के समय निकलने वाले चौदह रत्नों में से एक ऐरावत था।